हिन्दी विभाग
स्नातक द्वितीय (II)
पत्र संख्या - 03

समकालीन कविता में काल संसक्ति

नई कविता के उपरान्त कविता बड़ी तीव्रता से तूफानी दौर से गुजरी। अनेक आन्दोलन कविता के क्षेत्र में हमारे सामने आए यथा- नूतन कविता, समसामयिक कविता, अकविता, अभिनव कविता, सहज कविता, युयुत्सवादी कविता, अस्वीकृत कविता आदि। कविता जीवन की व्याख्या है अतः वह जिन्दगी के तमाम 'फलसफे' को अपने भीतर समेटे रहती है।

समकालीन कविता अपने युग एवं परिवेश से सम्पृक्त है। इस कविता में हमें अपने वर्तमान को देख सकते हैं; हमारी आशा-निराशा, आकांक्षा-अपेक्षा, राग-विराग, हर्ष-विषाद सब इसमें समाए हुए हैं। राजनीतिक अव्यवस्था, उत्तरोत्तर कठिन होता जा रहा जीवनयापन, सामाजिक विकृतियाँ, खोखले सिद्धान्त सबको समकालीन कविता में समेटा गया है। समकालीन कविता का स्वर व्यंग्य एवं आक्रोश से भरा हुआ है और उसमें बौद्धिकता भी प्रभूत मात्रा में है।

समकालीन कविता में विविध मानव जीवन तनावों, विसंगतियों एवं कुण्ठाओं को लिए हुए जी रहा है, वे पूर्णतः यथार्थ हैं। इस कविता में पहले की कविता की तुलना में सपाटबयानी अधिक है।

समकालीन कविता उस मोहभंग को दर्शाती है जो स्वतंत्रता के बाद लोगों के हृदय में उत्पन्न हुआ था। आज हमें लगता है कि पूरी तरह ठगे हुए हैं। नेताओं के वादे खोखले साबित हुए। सब के घर में रौशनी और खुशहाली का वादा किया गया था, पर यथार्थ में हम पूरे शहर में एक चिराग तक नहीं जला सके:

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए॥

अकाल, बेरोजगारी, भुखमरी, जातिवाद, भाषावाद, धार्मिक संकीर्णता और साम्प्रदायिक दंगों ने हमारे आदर्श की पोल खोल दी। समकालीन कवि इन सब पर अपनी बेबाक टिप्पणी करता है आजादी से उसका मोहभंग हो गया है।

समकालीन कवियों ने स्वार्थलोलुप कुर्सी प्रेमी नेताओं पर बेबाक टिप्पणियां की हैं, ये नेता जनता को खिलौना समझते हैं और अपना उल्लू सीधा करने के लिए हमारा उपयोग करते रहते हैं।

जिस तरह चाहो बजाओ इस सभा में
हम नहीं हैं आदमी हम झुनझुने हैं।

समकालीन कविता में जीवन की निर्मम वास्तविकताओं का यथार्थ चित्रण हुआ है यह जीवन की भयावह त्रासदी, क्रूरता और विसंगतिपूर्ण स्थितियों को सामने लाती है।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं०- 8292271041

दिनांक
04/01/2021